पाठ - 11
उहद की जंग

الدرس الحادي عشر - هندي
معركة أحد

बदर की जंग के एक साल बाद यह जंग मुसलमानों और काफ़िरों के बीच पेश आयी। मुश्रिकों ने बदर की जंग में पराजित होने के बाद मुसलमानों से बदला लेने का इरादा किया। अतएव वे लोग तीन हज़ार सैनिकों के साथ निकल पड़े। मुसलमानों ने उनका सामना लगभग सात सौ आदमियों से किया। शुरु में मुसलमान विजयी रहे और काफ़िरों पर ग़ालिब रहे और मुश्रिकीन मक्का की तरफ़ भाग खड़े हुए लेकिन मुश्रिकीन दूसरी बार लौटे और पहाड़ की तरफ़ से मुसलमानों पर टूट पड़े जिधर से वे तीर अन्दाज़ अपनी जगह से हट गए थे जिस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको नियुक्त किया था और माले ग़नीमत जमा करने के उद्देष्य से पहाड़ के ऊपर से उतर गए थे तो इस जंग में मुश्रिकों का पलड़ा भारी रहा

ग़ज़वए खन्दक़ : जंगे उहूद के बाद कुछ यहूदी मक्का वालों के पास गए और उनको मदीना में मुसलमानों से लड़ने पर उभारा, इसी के साथ उन्होंने मदद करने व पूरे समर्थन का वायदा किया तो मुश्रिकों ने उनकी बात मान ली। इसके बाद यहूदियों ने दूसरे क़बीलों को भी मुसलमानों के साथ जंग पर आमादा किया तो उन्होंने भी इस तरह से उनकी बात मान ली। अतएव मुश्रिकीन हर जगह से मदीना के आस पास जमा होने लगे यहां तक कि मदीना के गिर्द दस हज़ार जंगजू जमा हो गए। नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुश्मनों की चलत फिरत का पता था, इस वजह से आपने इस मामले में सहाबा किराम से मश्वरा किया तो सलमान फ़ारसी रजियल्लाहु अन्हु ने आपको मश्वरा दिया कि मदीना के जिस ओर पहाड़ नहीं हैं उधर खन्दक़ खोदी जाए। मुसलमानों ने खन्दक़ खोदने में हिस्सा लिया अतएव जल्द ही खन्दक़ खोद ली गयी और दूसरी ओर मुश्रिकीन मदीना के बाहर लगभग एक महीना कैम्प लगाए रहे। वे खन्दक़ में घुसने की हिम्मत न कर सके। इसके बाद अल्लाह ने सख्त आंधी भेजी जिस से उनके खेमे उखड़ गए। उस दिन से उनके दिलों में भय बैठ गया और जल्द ही अपने घरों को भाग खड़े हुए। अल्लाह ने अकेले ही तमाम जमाअतों को पराजय से दोचार किया और मुसलमानों को विजयी किया।

फतहे मक्का : सन 8 हिजरी में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का पर चढ़ाई की और इसे फ़तह करने का फ़ैसला किया। आप दस हजार फ़ौज के साथ 10 रमजानुल मुबारक को निकले और बिना जंग व लड़ाई के मक्का में दाखिल हो गए। जहां कुरैश ने हथियार डाल दिए और अल्लाह ने मुसलमानों को फ़तह से नवाज़ा। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिदे हराम की तरफ गए, खाना काबा का तवाफ़ किया और उसके अन्दर दो रकअतें अदा कीं। इसके बाद काबा के अन्दर और उसके ऊपर मौजूद तमाम बुतों को तोड़ डाला। इसके बाद काबा के दरवाज़े पर खड़े हुए। उस समय नीचे कुरैश के लोग खड़े इस बात का इन्तिज़ार कर रहे थे कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके साथ क्या मामला करते हैं।

इस मौक़े पर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः ''ऐ कुरैश की जमाअत! तुम्हें क्या लगता है कि मैं तुम लोगों के साथ क्या करुंगा? उन लोगों ने कहाः ''भलाई की उम्मीद है कि आप बहुत ही शरीफ़ हैं और शरीफ व्यक्ति के बेटे हैं। आपने फ़रमायाः ''जाओ तुम सब आज़ाद हो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन दुश्मनों की माफ़ी के मामले में एक बेहतरीन नमूना क़ायम किया जिन्होंने आप के सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम को सताया और उन्हें तरह तरह की यातनाएं दीं और देश से निकाल दिया।

मक्का की फ़तह के बाद लोग गिरोह के गिरोह दीने इस्लाम में दाखिल होने लगे। सन 10 हिजरी में रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज किया। आपने अपनी ज़िन्दगी में यही एक हज किया। आप के साथ एक लाख से अधिक लोगों ने हज का फ़रीजा अदा किया। हज की अदाएगी के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना वापस लौट गए।